कथा सरिता

भीतर तो देखो !

भगवान कैसे मिलेगा ? आदमी से मिलना नहीं हो पा रहा है। बस इतनी-सी बात है। इसलिए बुद्ध ने ईश्वर को हटा लिया और बुद्ध ने कहा, इस ईश्वर को हटाने से लाभ होगा। हानि तो कुछ भी नहीं और फिर भीतर ईश्वर को प्रतिष्ठित किया। तुम्हारा मंदिर अगर तुम्हारे भीतर हो, तो लड़ाई-झगड़े पैदा नहीं होंगे। तुम्हारा मंदिर अगर बाहर बना, तो मस्जिद से अलग हो जाएगा। लड़ाई-झगड़े शुरू हो जायेंगे। बुद्ध ने कहा - अब वक्त आ गया है कि मंदिर आदमी के भीतर बने। वक्त आ गया है कि अब आदमी बने। अब ईंट पत्थर के मंदिर से काम नहीं चलेगा। निश्चित ही मनुष्य को भगवान बनाया। मनुष्य को भगवान होने की संभावना दी। मनुष्य को कहा - भगवान कही और नहीं, तेरे ही बीच में छिपा है। उसे प्रकट होना है। ठीक भूमि है, जल सींच, सुरक्षा कर, सूरज की किरणों को पड़ने दे, मेघ बरसे तो छिपे मत, खुला रख, अनुकूल समय पर सम्यक् ऋतु में तेरा फूल खिलेगा। तू मिटेगा। भगवान होगा। इसीलिए तो भगवान बुद्ध कहते रहे हैं कि भगवान नहीं है। फिर भी उनको प्रेम करने वाले लोग उन्हें भगवान कहते रहे। और बुद्ध ने एक भी जगह इनकार नहीं किया कि मुझे भगवान मत कहो। यह थोड़ा सोचने जैसा है। यह आदमी कहता है, कोई ईश्वर नहीं है, कोई भगवान नहीं है। उसके शिष्य उसे भगवान कहकर बुलाते रहे और उसने एक बार भी न कहा कि मुझे भगवान मत कहो। बुद्ध ने भगवान को मनुष्य की अंतिम संभावना बनाया। वह मनुष्य का पूरा खिल जाना है, मनुष्य का प्रफुल्ल हो जाना है। न भगवान की पूजा की जरूरत है और न भगवान का गुणगान करने की जरूरत है। आओ, भगवान ही हो जाओ। उठो ! अपनी गरिमा को समझो, अपनी गरिमा की अभिव्यक्ति करो। उठो ! अभिव्यंजना दो।

ईश्वर की शरण

मानव जीवन श्रेष्ठ है। इसे ईश्वर का वरदान समझकर, सत्कर्म करते हुए जीना ही मानव जीवन का लक्ष्य है। इस संसार में केवल मनुष्य ही ऐसा प्राणी है, जिसे ईश्वर ने बुद्धि, विवेक देकर इस धरती पर भेजा है। ऐसा जीवन पाकर भी यदि मनुष्य का आध्यात्मिक उत्थान नहीं हुआ, तो सारा जीवन व्यर्थ हो जाता है। आध्यात्मिक उन्नति का अर्थ है ईश्वर को जानना, उसे पहचानना तथा उसके प्रति आस्थावान होना। यह मानव जीवन भोग के लिए नहीं मिला है। हमें यह सोचना चाहिए कि क्या जन्म और मृत्यु के इस चक्र में फंसकर यह बहुमूल्य जीवन व्यर्थ गंवा दें या इसे प्रभु की भक्ति में लगाकर परमानंद को प्राप्त हो जाएं ? ईश्वर की कृपा पाकर ही कोई इस संसार बंधन से मुक्त हो सकता है। इसके लिए चिंतन, मनन और भजन तीनों आवश्यक है। इस सृष्टि का रचयिता कैसा है, इतनी व्यापक व्यवस्था का संचालन करने वाला कितना श्रेष्ठ है, आदि विषयों पर हमें चिंतन करना चाहिए। इस बीच जो अनुभूति होती है, उस पर गहन रूप से मनन करना चाहए।

यह सृष्टि कब से है, कब तक रहेगी, जीवन यात्रा का लक्ष्य क्या है, ईश्वर ने मनुष्य को सभी चीजों से श्रेष्ठ क्यों बनाया - आदि विषयों पर मनन करना चाहिए। विज्ञान भी अंत में कह देता है कि कोई सर्वोच्च सत्ता है, उसे चाहे जिस नाम से पुकारें। उस ईश्वरीय सत्ता का ज्ञान चिंतन और मनन से होता है। चिंतन और मनन के बाद उस सत्ता के प्रति अगाध आस्था उत्पन्न करने के लिए भजन आवश्यक है। भजन के बार-बार भजने से ईश्वर के प्रति आस्था प्रबल हो जाती है। चिंतन, मनन और भजन, तीनों में जब तक सामंजस्य स्थापित नहीं होगा, तब तक व्यक्ति की आध्यात्मिक उन्नति नहीं होगी। तब तक न तो ईश्वर का साक्षात्कार होगा और न परमानंद की प्राप्ति। अत: हर मानव के लिए यह आवश्यक है कि जीवन की इस आपाधापी में से कुछ समय निकालकर उस सर्वोच्च सत्ता के लिए चिंतन, मनन और भजन के पथ का अनुगमन करे। क्या हम श्रेष्ठ मानव शरीर पाकर भोगों में लिप्त रहकर अपना सारा जीवन यूं ही व्यर्थ गंवा देंगे ? जीवन और मृत्यु का जाल चारों तरफ फैला है। इस जाल से बचने का एक ही उपाय है - ईश्वर की शरण में जाना।

अनोखे ढंग से महात्मा ने दिया मोह से बचने का संदेश

एक महात्मा की संपत्ति मात्र चार वस्तुएं थी - एक कंबल, चिमटा, तूंबी और लंगोटी। इन चारों वस्तुओं में कीमत की दृष्टि से सर्वाधिक मूल्यवान था कंबल, जो महात्मा को किसी भक्त ने दिया था। एक रात वह कंबल चोरी हो गया। दूसरे दिन जब महात्मा के भक्त उनकी कुटिया में आए तो उन्हें यह जानकर बड़ा दु:ख हुआ। इन सभी ने महात्मा को दूसरा कंबल लाकर देने की बात कही, जिसे उन्होंने अस्वीकार कर दिया। उन्होंने कहा मुझे पता है कि वह कंबल कौन ले गया है ? कहां है और कब मिलेगा ? भक्त समझे कि महात्मा त्रिकालदर्शी हैं और उन्होंने चोर का पता लगा लिया है। उन लोगों ने महात्मा से प्रार्थना की कि वे चोर के बारे में बता दें ताकि उसे दंड दिया जा सके। यह सुनकर महात्मा उठ खड़े हुए और भागने लगे। भक्तों ने पूछा कि कहां जा रहे हैं ? वे बोले - चोर को पकड़ने जा रहा हूँ। तुम सभी मेरे पीछे चले आओ। सभी भक्तों को लेकर वे श्मशान में पहुंचे और धूनी रमाकर बैठ गए। भक्तों ने पूछा - क्या चोर यही है ? महात्मा ने उत्तर दिया - एक न एक दिन वह यहीं आयेगा। सारी दुनिया यही आती है। यही सभी की अंतिम मंजिल है। उनकी भी, जिनके पास कंबल है और उनकी भी, जिनके पास कंबल नहीं है। उसकी भी, जिसका कंबल चोरी चला गया है और उसकी भी, जिसने कंबल चुराया है। महात्मा की बात का मर्म जानकर भक्तों को आत्मज्ञान प्राप्त हुआ। सार यह है कि मानव जीवन का अंतिम सत्य मृत्यु है, इसलिए किसी भी वस्तु के प्रति मोह नहीं रखना चाहिए, क्योंकि मोह अंतत: दु:ख का कारण बनता है।

जब गुलाम ने मालिक के रूप में अपनी बोली लगाई

यूनानी दार्शनिक डायजनीज शारीरिक रूप से काफी स्वस्थ और बलशाली थे। अपने जीवन के अंतिम दिनों में उन्होंने सब कुछ त्याग दिया था। वे महीनों जंगल में घूमते और बस्तियों से दूर रहते। एक दिन वे किसी निर्जन वन में घूम रहे थे। तभी उन्हें कुछ व्यापारी मिले। ये सभी सशस्त्र थे और इनका काम गुलामों का व्यापार करना था। ये लोग निर्धन और लाचार लोगों को पकड़ लेते और गुलाम बनाकर मंडियों में बेच देते। डायजनीज को देखकर उन्हें लगा कि इतना सुंदर और बलवान गुलाम तो काफी अच्छे पैसों में बिकेगा। उन्होंने डायजनीज को घेर लिया और बोले - हम तुम्हें गुलाम बनाने आए हैं। डायजनीज ने निर्भीकता से कहा - ठीक है, हम गुलाम हुए। किंतु हम अपने मन के मालिक हैं। बोलो कहां चलना है ? वे बोले - पहले तुम्हें जंजीरें तो डाल दें। डायजनीज ने कहा - क्यों व्यर्थ समय और शक्ति नष्ट करते हो ? मैं कहीं नहीं भागूंगा। उन्होंने मंडी पहुंचकर डायजनीज की गुलाम के रूप में बोली लगानी शुरू की। तब डायजनीज ने कहा - नासमझो ! तुम मेरे पीछे आए हो या मैं तुम्हारे पीछे आया हूँ ? कौन, किससे बंधा है ? इसलिए मैं आवाज लगाता हूँ कि एक मालिक बिकने आया है। जिसे खरीदना हो, खरीद ले। डयजनीज ने यही आवाज लगाई। खरीदारों की भीड़ हैरान रह गई और उधर से गुजर रहे यूनान के बादशाह सिकंदर ने डायजनीज को अपना गुरु मानकर उसके समक्ष सिर झुका दिया। वस्तुत: किसी को शारीरिक रूप से परास्त करके गुलाम नहीं बनाया जा सकता। प्रेम से अधिकार पाया जा सकता है, बल से नहीं।

निवाई (टोंक)। उपसेवा केंद्र का उद्घाटन करते हुए ब्र.कु.सुषमा, ब्र.कु.चंद्रकला, ब्र.कु.बीना तथा अन्य।

टेंभुर्णी (सोलापुर)। 'राजमाता जीजाबाई कृषि भूषण' पूरस्कार विजेता सुनंदाताई शिंदे को आध्यात्मिक चर्चा करने के पश्चात् ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु.सुरेखा।

त्रिरूचापल्लई। नव निर्मित भवन 'शिव दर्शन' का उद्घाटन करते हुए ब्र.कु.मलिंगा साथ में हैं ब्र.कु.जयश्री तथा अन्य।

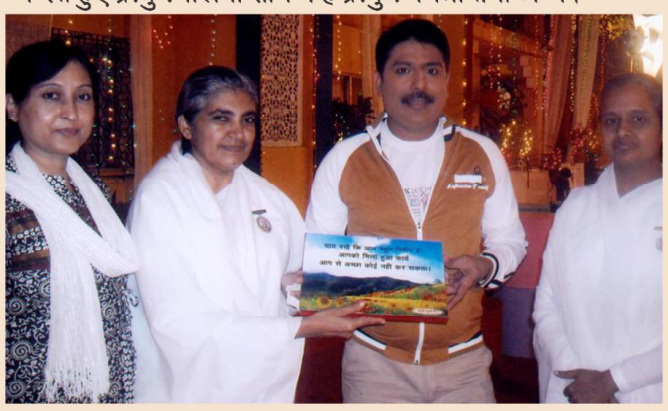

गोरेगांव (मुम्बई)। टी.वी.चैनल पर प्रसिद्ध नाटक 'तारक महेता का उल्टा चश्मा' के हास्य कलाकारों को आध्यात्मिक संदेश देने के पश्चात् ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु.रश्मि, ब्र.कु.संगीता।

विराटनगर (नेपाल)। 'स्नेह-मिलन' कार्यक्रम में ग्रुप फोटो में हैं उद्योगपति टिका ढकालज्यू, हेमराज ढकालज्यू, ब्र.कु.गीताज्यू।

मंझौली (जबलपुर)। 'विश्व नव निर्माण आध्यात्मिक चित्र प्रदर्शनी' का उद्घाटन करने के पश्चात् ग्रुप फोटो में हैं महामण्डलेश्वर प्रज्ञानंद जी महाराज, ब्र.कु.पुष्पा, ब्र.कु.प्रभा।